KALAM ACADEMY, SIKAR

3rd Grade Test Series-2025 L-1 Major - 01 [ANSWER KEY_Revised] HELD ON : 14/09/2025

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
Ans.	2	4	1	4	2	4	1	2	3	3	4	3	1	3	2	1	3	4	2	4
Q.	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
Ans.	2	1	1	4	1	*	1	2	1	4	4	3	1	1	3	3	1	2	4	3
Q.	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
Ans.	2	2,3	4	4	3	4	2	3	2	2	2	4	2	3	2	4	1	3	3	1
Q.	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
Ans.	4	3	1	2	3	4	2	3	2	2	3	1	2	1	2	3	4	2	4	3
Q.	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
Ans.	1	4	2	3	1	2	1	2	2	4	1	2	3	2	3	4	3	1	4	3
Q.	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120
Ans.	4	2	3	3	2	3	3	4	2	4	2	3	2	2	3	2	2	4	3	4
Q.	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140
Ans.	3	3	3	3	3	1	4	4	3	2	2	1	3	1	2	4	4	2	3	1
Q.	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150										
Ans.	3	3	2	4	2	2	4	1	2	3										

Major-01
L-1
Solution

1. उत्तर (2)

व्याख्याः-

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश में पाये जाने वाले बालुका स्तूप-

- **पवनानुवर्ती या रेखीय (अनुदैर्ध्य) बालूका स्तूप-** यह सामान्यतः वायु की दिशा के अनुरूप विस्तृत होते हैं तथा कभी-कभी एकाकी पहाड़ी पर पवन विमुख ढ़ालों पर भी पाये जाते हैं। इन बालूका स्तूपों पर वनस्पति आवश्यक रूप से पायी जाती है। यह बालूका स्तूप **जैसलमेर के दक्षिण-पश्चिम, रामगढ़ के दक्षिण-पश्चिम, जोधपुर व बाड़मेर, दृष्द्वती नदी, मेंढ़ा नदी, लूनी नदी व जवाई नदी** के पार्श्व पर दिखाई देते हैं।
- **अनुप्रस्थ-** पवन की दिशा के लम्बवत बनने वाले स्तूप। जैसे- **बरखान, परवलयिक** (हेयरपिन)। **बीकानेर के पूगल, हनुमानगढ़ के रावतसर, गंगानगर के सूरतगढ़, चूरू, झुन्झुनूं जिलों में विस्तृत।**
- **नेबखा-** मरुस्थल में झाड़ियों के सहारे निर्मित स्तूप (शर्ब कॉपीस)।
- **अवरोधी बालूका स्तूप-** किसी अवरोध के कारण (पेड़, झाड़ी, पर्वत, भवन) उत्पन्न जमाव से निर्मित। इन बालूका स्तूपों को जीवावशेष बालूक स्तूप माना जाता है। जैसे- पुष्कर, नाग पहाड़, बूढ़ा पुष्कर, बिचून पहाड़, जोबनेर एवं सीकर की पहाड़ियों में मिलते हैं।

2. उत्तर (4)

व्याख्याः-

दक्षिण अरावली की प्रमुख चोटियाँ-

- सायरा (उदयपुर) - 900 मीटर
- लीलागढ़ (उदयपुर) - 874 मीटर
- नागपानी (उदयपुर) - 867 मीटर
- गोगुन्दा (उदयपुर) - 840 मीटर
- कोटड़ा/काटड़ा (उदयपुर) - 450 मीटर
- ऋषभदेव (उदयपुर) - 400 मीटर

नोट- 651 मीटर ऊँची सिरावास चोटी (अलवर), जो कि उत्तरी अरावली में स्थित है।

3. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- **उच्चावच की दृष्टि से दक्षिणी-पूर्वी पठार/हाड़ौती का पठार का विभाजन-**

1. **अर्द्धचन्द्राकार पर्वत श्रेणियाँ-** हाड़ौती के पठार पर अर्द्ध-चन्द्राकार रूप में पर्वत श्रेणियों का विस्तार है, जो क्रमशः बूँदी एवं मुकन्दरा पर्वत श्रेणियों के नाम से जानी जाती हैं।

- **कोटा की पहाड़ियाँ-** इन्हें **मुकुन्दरा की पहाड़ियों** के नाम से भी जाना जाता है, जो मुख्यतः कोटा व आंशिक रूप से झालावाड़ में स्थित है। इनकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 335 से 503 मीटर है। चँदवाड़ा क्षेत्र में इनकी सर्वोच्च चोटी 517 मीटर ऊँची है।
- **डाबी का पठार** (बूँदी व कोटा की पहाड़ियों के बीच)

2. **नदी निर्मित मैदान-** बूँदी और मुकन्दरा पर्वत श्रेणियों से आवृत्त लगभग 7885 वर्ग किमी. का क्षेत्र चम्बल और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित मैदानी प्रदेश है। यह हाड़ौती पठार की सबसे बड़ी भू-आकृतिक इकाई है।
3. **शाहबाद का उच्च स्थल-** यह मुख्यतः बाराँ जिले का पठारी भाग है। हाड़ौती पठार का पूर्ववर्ती अपेक्षाकृत उच्च क्षेत्र है, जिसे 'शाहबाद उच्च क्षेत्र' कहा जा सकता है। यह क्षेत्र 300 मीटर की समोच्च रेखा से आवृत है और पश्चिम की ओर 50 मीटर तक पहुँच जाता है। इसका सर्वोच्च क्षेत्र कस्बा थाना में समुद्रतल से 456 मीटर ऊँचा है। यहाँ स्थित रामगढ़ झील एक क्रेटर झील है।
4. **झालावाड़ का पठार-** मुकन्दरा श्रेणियों के दक्षिण में लगभग 6183 वर्ग किमी. का क्षेत्र 300 से 450 मीटर की ऊँचाई वाला पठारी भाग है। यह भाग मालवा के पठार का अभिन्न अंग है और दक्षिण के पठार से समानता रखता है।
5. **डग-गंगधार के उच्च क्षेत्र-** यह मुख्यतः झालावाड़ जिले में स्थित है। यह हाड़ौती के पठार के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है। डंग-गंगधार का क्षेत्रफल 1429 वर्ग किमी. है, जो हाड़ौती के पठार की सबसे छोटी भू-आकृतिक इकाई है। इसकी औसत ऊँचाई 450 मीटर है।

4. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- **पूर्वी मैदान-** राजस्थान का पूर्वी प्रदेश जिसमें एक ओर भरतपुर, अलवर के भाग, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, जयपुर, टोंक, भीलवाड़ा के मैदानी भाग सम्मिलित किए गए हैं तो दूसरी ओर दक्षिण में स्थित मध्य माही का क्षेत्र भी इसमें सम्मिलित है।
- यह प्रदेश राज्य के लगभग 23.3 प्रतिशत भाग पर विस्तृत है।
- यह मैदान पश्चिम से पूर्व की 50 सेमी. समवर्षा रेखा द्वारा विभाजित है।
- इसकी दक्षिणी-पूर्वी सीमा विन्ध्यन पठार द्वारा बनाई जाती है।
- इस मैदान के अन्तर्गत चम्बल बेसिन, बनास बेसिन और माही बेसिन (छप्पन बेसिन) सम्मिलित हैं।

नोट- गौडवाड़ प्रदेश/लूणी बेसिन, उत्तरी पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश के अन्तर्गत अर्द्धशुष्क/बांगर प्रदेश का अभिन्न अंग है।

5. उत्तर (2)

व्याख्याः-

भू-आकृतिक प्रदेश	प्राकृतिक भू दृश्य
हाड़ौती प्रदेश -	डाबी का पठार
माही बेसिन -	वागड़ प्रदेश
मध्य अरावली -	परवेरिया दर्रा
घग्घर का मैदान -	नाली
बाणगंगा बनास बेसिन -	पिडमांट व मालपुरा-करौली मैदान

6. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- **राजस्थान की प्रमुख नदियों के उद्‌गम स्थल-**

नदी	**उद्‌गम स्थल**
लूनी -	नाग पहाड़ियाँ (अजमेर)
बनास -	खमनौर की पहाड़ियाँ (कुम्भलगढ़, राजसमंद)
पार्वती-	सिहोर की पहाड़ियाँ (मध्यप्रदेश)
घग्घर -	शिवालिक श्रेणी (हिमाचल प्रदेश)

7. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- राजस्थान की प्रमुख नदियों का अपवाह क्षेत्र (जलग्रहण) की दृष्टि से घटता क्रम- **बनास (27.48%) > लूनी (20.21%) > चम्बल (17.18%) > माही (9.46%) > बाणगंगा एवं गम्भीरी (8.47%)।**
- **उपलब्ध जल के आधार पर** राजस्थान की नदियों का व्यवस्थित अवरोही क्रम - **चम्बल, बनास, माही तथा लूनी**।
- **बनास-** राजस्थान में पूर्णतः बहने वाली सबसे लम्बी नदी।

8. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- बाराँ जिले में पार्वती नदी से बैंथली, ल्हासी (लासी), बिलास/विलास, अंधेरी, रेतरी, अहेली, कूल आदि सहायक नदियाँ मिलती हैं।

9. उत्तर (3)

व्याख्याः-

चम्बल नदी-

- यह नदी राजस्थान की **सबसे लम्बी व एकमात्र वर्ष भर** बहने वाली नदी है।
- **अन्य नाम-** चर्मण्वती/कामधेनु/नित्यवाही/वाटर सफारी (कोटा)
- यह मध्यप्रदेश की विंध्याचल श्रेणी में जानापाव पहाड़ियों से निकलती है तथा इसके बाद, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश से प्रवाहित होते हुए उत्तरप्रदेश में मुरादगंज के निकट यमुना नदी में मिलती है।
- इसकी कुल लम्बाई 965 किमी. है। राजस्थान में यह नदी 135 किमी. का मार्ग चित्तौड़गढ़ व कोटा, बूँदी जिलों तय करती है तथा 241 किमी. की लम्बाई में यह सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर की सीमा से होते हुए राजस्थान व मध्यप्रदेश के बीच अंतर्राज्यीय सीमा बनाती है।
- यह नदी कोटा-बूँदी जिले की सीमा पर बहती है।
- राजस्थान में यह चित्तौड़गढ़ जिले के चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है। चौरासीगढ़ से कोटा के मध्य यह नदी संकीर्ण घाटी में प्रवाहित होती है।

10. उत्तर (3)

व्याख्या:-

नदी	**समापन स्थल**
साबरमती -	खम्भात की खाड़ी
पश्चिमी बनास -	कच्छ का रण/कच्छ की खाड़ी
माही -	खम्भात की खाड़ी

11. उत्तर (4)

व्याख्या:-

सांभर झील-

- यह जयपुर, डीडवाना-कुचामन व अजमेर जिलों की सीमाओं पर स्थित हैं।
- यह देश के आन्तरिक भागों में स्थित **सबसे बड़ी खारे पानी की झील** है तथा सर्वाधिक नमक उत्पादन करने वाली झील हैं। जहाँ से देश के कुल नमक उत्पादन का **8.7 प्रतिशत** प्राप्त होता हैं।
- इस झील में नमक उत्पादन का कार्य केन्द्र सरकार के उपक्रम **हिन्दुस्तान साल्ट लिमिटेड** की सहायक कंपनी **सांभर साल्ट लिमिटेड** द्वारा किया जाता हैं। जिसकी स्थापना 1964 में की गई थी। यह सोडियम सल्फेट प्लांट है।

डीडवाना झील- डीडवाना-कुचामन

- यह साँभर के बाद दूसरी बड़ी खारे पानी की झील हैं इस झील से **सोडियम सल्फेट** का उत्पादन किया जाता हैं। यह नमक प्राय: खाने के अयोग्य होता है। राजस्थान सरकार द्वारा यहाँ **राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स लिमिटेड** की स्थापना की गई हैं।

पचपदरा झील- बालोतरा

- यहाँ उत्तम किस्म का नमक तैयार होता है जिसमें 98 प्रतिशत सोडियम क्लोराइड होता हैं। यहाँ नमक उत्पादन का कार्य **खारवाल** जाति के लोगों द्वारा किया जाता हैं, जो नमक के क्रिस्टल बनाने के लिए मोरली झाड़ी की टहनियों का प्रयोग करते हैं।

12. उत्तर (3)

व्याख्या:-

फतेहसागर झील- पिछोला झील के उत्तर-पश्चिम में, उदयपुर

- इस झील का निर्माण 1687 ई. में **महाराणा जयसिंह** द्वारा करवाया गया था परन्तु बाद में 1888 में **महाराणा फतेहसिंह** द्वारा इसका पुनर्निर्माण करवाया इसलिए इसे फतेहसागर झील के नाम से जाना जाता है।
- इस झील के निर्माण हेतु बाँध का शिलान्यास ड्यूक ऑफ कनॉट द्वारा किया गया था। इसलिए इसे **कनॉट बाँध** के नाम से जाना जाता हैं।
- इस झील के मध्य एक द्वीप है जिस पर **नेहरू उद्यान** स्थित है।
- इस झील में एक **सौर वैधशाला** की स्थापना की गई है।

13. उत्तर (1)

व्याख्या:-

कायलाना झील- जोधपुर

- इस झील में इंदिरा गाँधी नहर परियोजना से एक लिफ्ट नहर (राजीव गाँधी लिफ्ट नहर) निकालकर पानी की आपूर्ति की जाती हैं तथा इस झील से **जोधपुर शहर को पेयजल** प्राप्त होता है।

खारे पानी की झीलें-

- पोकरण, कावोद - जैसलमेर
- फलौदी व बाप झील - फलौदी
- लूणकरणसर - बीकानेर
- डेगाना, परबतसर - नागौर
- कुचामन, नावा - डीडवाना-कुचामन
- रैवासा, कोछोर/कछोर - सीकर
- झखराद, थोब - बाड़मेर
- ताल छापर - चूरू
- तालछापर झील चूरू में स्थित है- वर्तमान में इसका क्षेत्रफल संकुचित हो रहा है।

14. उत्तर (3)

व्याख्या:-

(जिला)	**(झील/बाँध)**
अजमेर -	आना सागर, फाय सागर, पुष्कर, नारायण सागर बाँध, जैनसागर।
बीकानेर -	गजनेर, अनूप सागर, सूर सागर, कोलायत।
बाँसवाड़ा -	बजाज सागर बाँध, कडाणा बाँध, आनंदसागर, देलाव।
जैसलमेर -	धारसी सागर, गढ़ीसर, अमरसागर, बुझ झील, गज स्वरूपसागर, मूलसागर।
टोंक -	बीसलपुर, टोरडी सागर, गलवा, मोतीसागर।

15. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- घोसुण्डा बाँध चित्तौड़गढ़ जिले में बेड़च नदी पर स्थित है।

चम्बल नदी पर स्थित प्रमुख बाँध-

- गाँधी सागर बाँध - मंदसौर (मध्यप्रदेश), प्रथम चरण में निर्मित।
- राणा प्रताप सागर- रावतभाटा (चित्तौड़गढ़) [सर्वाधिक भराव क्षमता वाला बाँध]
  राणा प्रताप सागर बाँध चम्बल परियोजना के द्वितीय चरण में निर्मित है, जो कि चम्बल नदी पर स्थित सबसे लम्बा बाँध है।
- जवाहर सागर बाँध- कोटा, तृतीय चरण में निर्मित।
  जवाहर सागर बाँध, बोरवास गाँव के निकट (कोटा) स्थित है।
- कोटा बैराज- कोटा (केवल सिंचाई हेतु), प्रथम चरण में निर्मित।

16. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- राजस्थान की स्थिति 23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांशों के मध्य स्थित है तथा कर्क रेखा ($23\frac{1}{2}°$ उत्तरी अक्षांश) इसके दक्षिणी भाग डूँगरपुर-बाँसवाड़ा जिलों से गुजरती है। अत: सम्पूर्ण राज्य उष्ण कटिबन्ध में है। जहाँ तापमान अपेक्षाकृत अधिक होता है।
- अत: उष्ण कटिबन्धीय जलवायु के साथ न्यून वर्षा ने यहाँ के अधिकांश भागों में शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु की दशाएँ उपस्थित की है।
- राजस्थान अरब सागर के तट से 350 किमी. दूर है अत: यहाँ की जलवायु पर समुद्री प्रभाव नगण्य है और सम्पूर्ण राज्य महाद्वीपीय जलवायु से युक्त है जो गर्म एवं शुष्क होती है।

17. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **ग्रीष्म ऋतु (मार्च से मध्य जून तक)**- ग्रीष्म ऋतु का प्रारम्भ मार्च से हो जाता है और सूर्य के उत्तरायण में होने के कारण क्रमिक रूप से तापमान में वृद्धि होने लगती है और सम्पूर्ण राजस्थान में उच्च तापमान हो जाता है।
- इस समय चलने वाली **पश्चिमोत्तर हवाएँ** तापमान को और अधिक शुष्क कर देती हैं, क्योंकि ये शुष्क मरुस्थलीय प्रदेश से आती हैं।

18. उत्तर (4)

व्याख्या:-

शुष्क जलवायु प्रदेश-

- राजस्थान में अतिशुष्क जलवायु जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, गंगानगर एवं चूरू जिलों में है। यहाँ ग्रीष्मकाल में 45° से. से 50° से. तक अधिकतम तापमान हो जाता है तथा शीतकाल में शून्य से 8° से. तक न्यूनतम तापमान पहुँच जाता है। अत: दैनिक एवं वार्षिक तापान्तर यहाँ की विशेषता है।
- यहाँ वर्षा की मात्रा 20 सेमी. से कम होती है। ग्रीष्म ऋतु में धूल भरी आँधियाँ सामान्य हैं।
- यहाँ शीतकाल अर्थात् दिसम्बर-जनवरी में कुछ चक्रवातीय वर्षा हो जाती है।

19. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **प्रमुख समवर्षा रेखाएँ-**

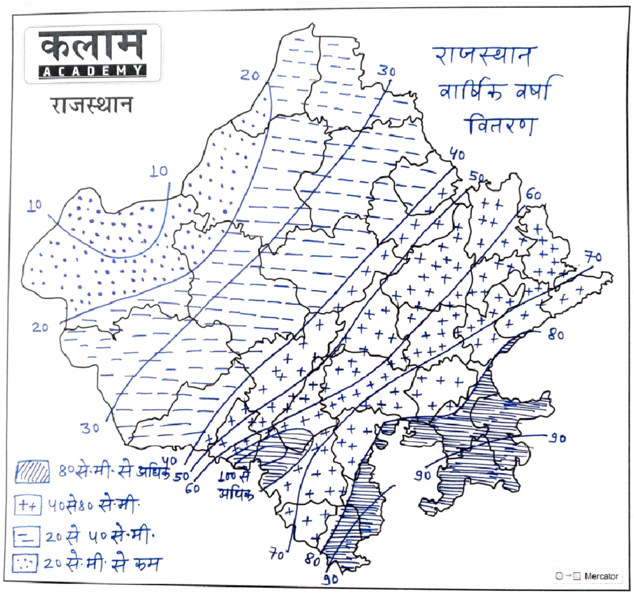

20. उत्तर (4)

व्याख्याः-

कोपेन के जलवायु वर्गीकरण

संकेत	जलवायु प्रदेश	जिले	वनस्पति
Aw	उष्ण कटिबंधीय आर्द्र जलवायु प्रदेश	डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़, दक्षिणी उदयपुर, दक्षिणी चित्तौड़गढ़, झालावाड़, दक्षिणी बाराँ **प्रतिनिधि जिला- बाँसवाड़ा**	मानसूनी पतझड़ वनस्पति। ये **सवाना तुल्य** घास के मैदानों से साम्यता रखते हैं।
BShw	अर्द्धशुष्क या स्टेपी जलवायु प्रदेश	दक्षिणी जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, सिरोही, पाली, जोधपुर, नागौर, सीकर, चूरू, झुन्झुनूं **प्रतिनिधि जिला- नागौर**	**स्टैपी तुल्य** वनस्पति व काँटेदार झाड़ियाँ।
BWhw	उष्ण कटिबंधीय शुष्क जलवायु	जैसलमेर, बीकानेर, गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू **प्रतिनिधि जिला- बीकानेर**	अधिकांश वनस्पति विहीन क्षेत्र, वर्षा ऋतु में कुछ घास उग जाती हैं।
Cwg	उप-आर्द्र जलवायु प्रदेश	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, जयपुर, दौसा, टोंक, बूँदी, भीलवाड़ा, अजमेर, राजसमंद, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, कोटा, बाराँ **सबसे बड़ा जलवायु प्रदेश** **प्रतिनिधि जिला- टोंक**	नीम, बबूल, शीशम, धोकड़ा के पेड़।

21. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- राजस्थान में शुष्क क्षेत्र में फल तथा सब्जियों की कृषि के शोध हेतु 'नेशनल रिसर्च सेन्टर फॉर एरिड हॉर्टीकल्चर' (National Research Centre for Arid Horticulture : NRCAH) की स्थापना बीकानेर में की गई है।
- अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्र फल समन्वित अनुसंधान परियोजना के केन्द्र को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार से लाकर बीकानेर में 1993 में स्थानांतरित करके शुष्क बागवानी अनुसंधान केन्द्र का कार्य वास्तविक रूप में आरंभ हुआ।
- **27 सितंबर 2000** से इसे संस्थान का दर्जा दिया गया और इसका नाम केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर रखा गया। अक्टूबर 2000 से भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलौर के गोधरा (गुजरात) स्थित केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र को इसमें विलय कर दिया गया था।
- **केन्द्रीय बागवानी परीक्षण केन्द्र, पंचमहल (गुजरात)** इसका एक क्षेत्रीय केन्द्र है।

22. उत्तर (1)

व्याख्याः-

राजस्थान कृषि सांख्यिकी 2023-24

फसल	सर्वाधिक उत्पादन	प्रमुख किस्में
कपास	गंगानगर, हनुमानगढ़, जोधपुर, नागौर	बीकानेरी नरमा, वीरनार, वराहलक्ष्मी, गंगानगर अगेती
गन्ना	गंगानगर, चित्तौड़गढ़, बूंदी, उदयपुर	को-419, 449, 997, 527, 1007, 1111, को.एस. 767
गेहूं	हनुमानगढ़, गंगानगर, चित्तौड़गढ़, बूंदी	कल्याण, सोना, सोनालिका, मंगला, गंगा, सुनहरी, दुर्गापुरा-65 लाल बहादुर, राज-3077, चम्बल 65, सरबती, कोहिनूर
जौ	गंगानगर, जयपुर, सीकर, भीलवाड़ा	ज्योति, राजकिरण, RD-2035, RD-57, 2052, RDB-1, R.S.-6, B.L.-2
सरसों	टोंक, अलवर गंगानगर, भरतपुर	पूसा बोल्ड, पूसा कल्याण, रोहिणी, पूसा जय किसान, पीताम्बरी

23. उत्तर (1)

व्याख्याः-

राज्य के प्रमुख कृषि जलवायु क्षेत्र/विस्तार-

- अन्तः स्थलीय जलोत्सरण के अन्तवर्ती मैदानी क्षेत्र **(II-A)**– नागौर, सीकर, झुन्झुनू, चूरू, डीडवाना–कुचामन
- अर्द्ध शुष्क पूर्वी मैदानी क्षेत्र **(III-A)**– जयपुर, अजमेर, दौसा, टोंक, ब्यावर (आंशिक), खैरथल–तिजारा, कोटपुतली–बहरोड
- बाढ़ सम्भाव्य पूर्वी मैदानी क्षेत्र **(III-B)**– अलवर, धौलपुर, भरतपुर, करौली, सवाई माधोपुर, डीग
- **अर्द्ध आर्द्र दक्षिणी मैदानी क्षेत्र (IV-A)**– भीलवाड़ा, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़, उदयपुर एवं सिरोही आंशिक

24. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- नारायणी माता मन्दिर (बरवा डूँगरी) अलवर जिले में स्थित है।

व्याख्याः-

- **कपास उत्पादन हेतु आवश्यक दशाएँ-**

वार्षिक वर्षा - 50 से 100 सेमी

तापमान - 20^0–30^0 सेंटीग्रेड

मिट्‌टी - काली/रेगुर

पाला रहित दिनों की संख्या- 90

- **नरमा**- अमेरिकन कपास को देश के उत्तरी पश्चिमी भाग (श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़) में नरमा कहते हैं जो **लम्बे रेशे वाली कपास** की फसल होती है।
- कपास को **"सफेद सोना"** व **बनियां (स्थानीय भाषा में)** भी कहते हैं।

नोट- गंगा सुनहरी तथा सोनालिका गेहूँ की प्रमुख किस्में हैं।

25. उत्तर (1)

व्याख्याः-

बजट 2024-25 की प्रमुख घोषणाएँ-

- **बाराँ में लहसुन उत्कृष्टता केन्द्र** स्थापित करना।
- अनूपगढ़ (श्रीगंगानगर) में मिनी फूड पार्क तथा साँचोर (जालौर) में एग्रो फूड पार्क की स्थापना करना।
- जैतारण (ब्यावर) व सिरोही में फल सब्जी मंडी तथा बनेठा (टोंक) व मंडार (सिरोही) में गौण कृषि मंडी की स्थापना करना।

26. उत्तर (*)

व्याख्याः-

- **प्रशासनिक दृष्टि से राजस्थान के वनों का वर्गीकरण-**

1. **आरक्षित वन (Reserved Forest)**- पूर्णतः सरकारी नियंत्रण में, इनमें किसी भी प्रकार की आर्थिक गतिविधि नहीं की जा सकती है।
2. **संरक्षित या सुरक्षित वन (Protected Forest)**- इसमें लाइसेंस प्राप्त कर पशुचारण व सुखी लकड़िया एकत्रित करने संबंधी कार्य कर सकते हैं।
3. **अवर्गीकृत वन (Unclassified Forest)**- आरक्षित व संरक्षित के अलावा शेष बचे हुए वनक्षेत्र (इसमें किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं है/सरकार को कोई नियंत्रण नहीं)।

वनों के प्रकार	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	प्रतिशत	सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाला जिला
आरक्षित वन (Reserved)	12198.71	36.95%	उदयपुर, चित्तौड़गढ़
रक्षित वन (Protected)	18631.13	56.43%	बाराँ, करौली
अर्गीकृत वन (Unclassified)	2184.16	6.62%	बीकानेर, श्रीगंगानगर
कुल वन	**33014**	**100%**	**उदयपुर, बाराँ**

27. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले में शीशम के वृक्ष पर्याप्त हैं।
- अर्जुन वृक्ष एक औषधीय वृक्ष है जो राजस्थान के झालावाड़ जिले में भवानी मण्डी क्षेत्र में बहुतायात में पाया जाता है।

28. उत्तर (2)

व्याख्याः-

राजस्थान वन विभाग द्वारा जारी रिपोर्ट-2023 के अनुसार-

- **राजस्थान में अधिकतम वन क्षेत्र (प्रतिशत) वाले जिले-**

1. प्रतापगढ़ (37.46%) 2. उदयपुर (35.49%)

3. करौली (32.77%) 4. बाराँ (32.18%)

- **राजस्थान में अधिकतम वन क्षेत्र (वर्ग किमी.) वाले जिले-**

1. उदयपुर (4161) 2. बाराँ (2250)

3. करौली (1810) 4. चित्तौड़गढ़ (1789)

29. उत्तर (1)

व्याख्याः-

राजस्थान वन विभाग द्वारा जारी रिपोर्ट-2023 के अनुसार-

- **राजस्थान में न्यूनतम वन क्षेत्र वाले जिले-**
  1. चूरू (79.91 वर्ग किमी.)
  2. हनुमानगढ़ (239 वर्ग किमी.)
  3. नागौर (242 वर्ग किमी.)
  4. जोधपुर (246 वर्ग किमी.)

30. उत्तर (4)

व्याख्याः-

राजस्थान वन नीति-2023 (5 जून 2023) के लक्ष्य-

- सामुदायिक वन प्रबंधन
- वन्य जीव संरक्षण
- वन क्षेत्र में वृद्धि एवं वन संरक्षण आदि

31. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- नारायणी माता मन्दिर (बरवा डूँगरी) अलवर जिले में स्थित है।
- राजस्थान में मैंगनीज मुख्यत: बाँसवाड़ा तथा इसके अलावा उदयपुर जिले में मिलता है। जयपुर और सवाईमाधोपुर जिले में क्वार्टजाइट शिलाओं की दरारों में मैंगनीज पाया जाता है।
- केवल बाँसवाड़ा जिले से ही वर्तमान समय में मैंगनीज का व्यापारिक खनन होता है।

32. उत्तर (3)

व्याख्याः-

एम-सैंड नीति-2024-

- **प्रारम्भ** - 4 दिसम्बर 2024 को।
- **अवधि**- 31 मार्च, 2029 या नई नीति घोषित होने तक।

उद्देश्य-

- रिवर सेण्ड पर निर्भरता को कम करना, उसके विवेकपूर्ण उपयोग को सुनिश्चित करना तथा नदी पारिस्थितिकी तंत्र के नुकसान को कम करना।
- मौजूदा M-सैण्ड उत्पादन को 20% प्रतिवर्ष की दर से बढ़ाना तथा 2028-29 तक प्रतिवर्ष 30 मिलियन टन उत्पादन को प्राप्त करना।
- निर्माण क्षेत्र के अपशिष्ट का पुनचक्रण (Recyle) कर सही उपयोग करना।
- इस नीति के अन्तर्गत राज्य के राजकीय निर्माण कार्यों में न्यूनतम 25 प्रतिशत एम. सैण्ड का उपयोग अनिवार्य है, जिसे उपलब्धता के आधार पर बढ़ाकर 50 प्रतिशत किया जाना प्रस्तावित है।

33. उत्तर (1)

व्याख्याः-

पोटाश खनन क्षेत्र-

- बीकानेर- अर्जुनसर, हनसेरन
- जयपुर- सीतापुरा, लखासर, भारूसारी

रॉक फास्फेट खनन क्षेत्र-

- **उदयपुर**- झामर कोटड़ा, डाकन कोटड़ा, माटोन, ढोल की पाटी, सीसारमा, कानपुर
- **जैसलमेर**- बिरमानिया, लाठी, फतेहगढ़
- **बांसवाड़ा**- सेलोपेट, राम का मुन्ना
- **अलवर**- अडुका-अन्दावरी
- **जयपुर**- अचरोल

पाइराइट खनन क्षेत्र-

- सलादीपुरा (सीकर)

टंगस्टन खनन क्षेत्र-

- **नागौर**- डेगाना (देश की सबसे बड़ी खान), भाकरी (रेवत की डूंगरी), बीजाथल, पीपलिया
- **पाली**- पादरला, नाना कराब, सेवरिया
- **सिरोही**- वाल्दा/बलदा, आबू रेवदर, उडुवारिया, खेड़ा ऊपरला, देवा का बेरा

34. उत्तर (1)

व्याख्याः-

राजस्थान के एकाधिकार (100%) वाले खनिज

´ सीसा-जस्ता ´ सेलेनाइट ´ वॉलेस्टोनाइट

विभिन्न खनिजों के उत्पादन में राजस्थान का प्रतिशत अंश

´ जिप्सम (93%)	´ एस्बेस्टोस (89%)
´ घीया पत्थर / सोप स्टोन (85%)	
´ रॉक फॉस्फेट (90%)	´ फेल्सपार (70%)
´ केल्साइट (70%)	´ वुल्फ्रेमाइट (50%)
´ तांबा (36%)	´ अभ्रक (22%)

35. उत्तर (3)

व्याख्याः-

लोहा अयस्क

- राजस्थान में सर्वाधिक लौह अयस्क जयपुर व दौसा से उत्पादित किया जाता है।

राजस्थान के प्रमुख लौह अयस्क क्षेत्र

जिला	प्रमुख क्षेत्र
जयपुर	मोरीजा-बानोल, बोमानी, चौमू सामोद क्षेत्र
दौसा	नीमला-रायसेला, लालसोट क्षेत्र
उदयपुर	नाथरा की पाल, थूर-हुण्डेर
सीकर	रामपुरा, डाबला
झुंझुनू	डाबला-सिंघाना, ताओन्दा, काली पहाड़ी
भीलवाड़ा	पुर-बनेड़ा, जहाजपुर, बीगोद
बूंदी	लोहारपुरा, मोहनपुरा
करौली	देदरोली, खोरा, लिलोती, टोडूपुरा

नोट- पादरला, नाना कराब तथा सेवरिया क्षेत्र (पाली) **टंगस्टन** उत्पादन क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है।

36. उत्तर (3)

व्याख्याः-

प्रमुख मृदा संस्थान/योजना-

- मृदा परीक्षण प्रयोगशाला - **जोधपुर व जयपुर**
- केन्द्रीय भू-संरक्षण बोर्ड का कार्यालय - **जयपुर व सीकर**

नोट- राजस्थान में 113 मृदा परीक्षण प्रयोगशालाएँ है।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना-

- **प्रारम्भः** 14 फरवरी, 2015 को सुरतगढ़ (श्रीगंगानगर) से
- केन्द्र व राज्य अनुपात क्रमशः - 75 : 25

नोट- इस योजना का उद्देश्य कृषि उत्पादकता बढ़ोतरी हेतु किसानों को मृदा की गुणवता, पोषक तत्वों आदि की जानकारी देना है।

37. उत्तर (1)

व्याख्याः-

मरुस्थलीय मृदा के उप-प्रकार	
उप-प्रकार	विस्तार क्षेत्र
बलुई रेतीली	जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर, झुंझुनूं, चूरू, श्रीगंगानगर
लाल रेतीली	नागौर, पाली, जोधपुर, जालौर, चूरू, झुंझुनूं, फलौदी
पीली-भूरी रेतीली	नागौर, डीडवाना-कुचामन व पाली
खारी व लवणीय मृदा	जैसलमेर, जालौर, बीकानेर, बाड़मेर, बालोत्तरा, नागौर व डीडवाना-कुचामन की निम्न भूमि

38. उत्तर (2)

व्याख्याः-

लाल-लोमी मृदा

- इसे **लैटेराइट या लाल-दोमट मृदा** भी कहते हैं।
- लौह तत्व की अधिकता के कारण इस मिट्टी का रंग लाल दिखाई देता है।
- इसमें नाइट्रोजन, फास्फोरस, चूना व ह्यूमस की कमी पाई जाती है।
- यह मिट्टी कम उपजाऊ है व **मक्का, चावल तथा गन्ने** की फसल के लिए उपयुक्त है।
- **विस्तार क्षेत्र**- डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, दक्षिणी व मध्य उदयपुर तथा दक्षिणी राजसमन्द में मिलती है।

39. उत्तर (4)

व्याख्याः-

मृदा प्रकार	विस्तार क्षेत्र
केल्सी ब्राउन मरुस्थली मृदा	जैसलमेर एवं बीकानेर
ग्रे-ब्राउन जलोढ़ मृदा	जालौर, पाली, नागौर, डीडवाना-कुचामन, अजमेर, ब्यावर एवं सिरोही
नॉन केल्सिल ब्राउन मृदा	जयपुर, सीकर, झुन्झुनूं, नागौर, अजमेर एवं अलवर

40. उत्तर (3)

व्याख्याः-

राजस्थान मृदा : आधुनिक वैज्ञानिक वर्गीकरण-

- मृदा की उत्पत्ति, रासायनिक संरचना एवं अन्य गुणों के आधार पर संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग **(USDA)** के विश्वव्यापी मृदा वर्गीकरण के अनुसार राजस्थान में **पाँच प्रकार** की मिट्टी पाई जाती है।

एरिडोसोल-

- **विस्तार**- सीकर, चूरू, झुन्झुनूं, नागौर, पाली, जालौर, जोधपुर
- **जलवायु**- यह शुष्क जलवायु प्रदेश में पाई जाती है।

नोट- यह राज्य में **सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र पर फैली** हुई है।

- एरिडोसोल मृदा की पश्चिमी राजस्थान में प्रधानता है।

एंटीसॉल-

- **विस्तार**- बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, जालौर, पाली, नागौर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, चूरू, झुन्झुनूं।
- **जलवायु**- यह मृदा शुष्क व अर्द्धशुष्क जलवायु प्रदेश में बिखरे हुए रूप में पाई जाती है।
- यह राजस्थान में दूसरी सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में फैली हुई मृदा है।
- यह मृदा भी पश्चिमी राजस्थान के अनेक भागों में विस्तारित है।

अल्फीसॉल-

- **विस्तार**- यह मृदा मुख्यत: **पूर्वी राजस्थान** की ओर पाया जाने वाला मृदा समूह है। (जयपुर, दौसा, अलवर, भरतपुर, डीग, सवाईमाधोपुर, टोंक, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, बाँसवाड़ा, राजसमंद, उदयपुर, बूँदी, कोटा, बाराँ, झालावाड़)
- **जलवायु**- यह उपार्द्र-आर्द प्रकार की जलवायु में पाई जाती है।

इन्सेप्टिसॉल-

- **विस्तार**- राजसमन्द, पाली, उदयपुर, सलूम्बर, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, सिरोही, झालावाड़, जयपुर, दौसा, अलवर, सवाईमाधोपुर।
- **जलवायु**- यह मिट्टी अर्द्धशुष्क से आर्द्र जलवायु प्रदेश में पायी जाती है।

वर्टीसॉल-

- **विस्तार**- दक्षिणी-पूर्वी पठार/हाड़ौती क्षेत्र (कोटा, बूँदी, बाराँ एवं झालावाड़) में विस्तृत है।
- **जलवायु**- यह मिट्टी आर्द्र से अतिआर्द्र जलवायु प्रदेश में पायी जाती है।
- यह **काली और चरनोजम मिट्टी** होती है।
- इस मृदा में **क्ले (चीका)** की मात्रा अधिक पायी जाती है।

41. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- **खिंचन (फलौदी) कुरजाँ** पक्षियों के प्रवास के कारण पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण केन्द्र बना हुआ है।
- खिंचन एवं मेनार गाँव को पक्षियों के संरक्षण हेतु नवीन रामसर साईट घोषित करने के पश्चात् **राज्य में कुल 4** तथा भारत में कुल 91 रामसर साईट हो गयी है।

राजस्थान के प्रमुख रामसर साईट-

- ♦ केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान - भरतपुर (1981)
- ♦ सांभर झील - जयपुर (1990)
- ♦ खिंचन - फलौदी (जून 2025)
- ♦ मेनार - उदयपुर (जून 2025)

42. उत्तर (2/3)

व्याख्याः-

कंजर्वेशन रिजर्व	अवस्थिति
आसोप -	भीलवाड़ा
अमरख-महादेव लेपर्ड -	उदयपुर
हमीरगढ़ -	भीलवाड़ा
रोटू -	नागौर

43. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- **बस्सी अभयारण्य (चित्तौड़गढ़)**- यह अभयारण्य अरावली तथा विन्ध्याचल पर्वतमालाओं के संगम स्थल पर स्थित है, इसे 1988 में अभयारण्य घोषित किया गया। **चौसिंघा, सैण्डग्राउज,** बघेरा, जंगली बिल्ली नामक जीवों और मगरमच्छ यहाँ विशेष आकर्षण का केन्द्र है।
- बंध बारेठा अभ्यारण्य (भरतपुर)
- मुकुन्दरा हिल्स राष्ट्रीय उद्यान (कोटा एवं चित्तौड़गढ़)
- शेरगढ़ अभ्यारण्य (बाराँ)

44. उत्तर (4)

व्याख्याः-
- **रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान (सवाई माधोपुर)**
  मुख्य जीव- भारतीय बाघ, बघेरे, साँभर, चीतल, नीलगाय, मगरमच्छ तथा रींछ।
- **केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (भरतपुर)**
  मुख्य जीव- सफेद सारस (साइबेरियन क्रेन), हँस, शुक, सारिका, चकवा-चकवी, लोह सारस, कोयल तथा राष्ट्रीय पक्षी मोर।
  नोट- यह एशिया में **पक्षियों का सबसे बड़ा प्रजनन क्षेत्र** है।
- **नाहरगढ़ अभयारण्य** (ऐतिहासिक दुर्ग आमेर, नाहरगढ़ व जयगढ़ के चारों ओर जयपुर में विस्तृत)
  मुख्य जीव- लंगूर, सेही, पाटागोह तथा बाघ।
- **बंध-बारेठा अभयारण्य (भरतपुर)**
- **बस्सी अभ्यारण्य (चित्तौड़गढ़)**
  मुख्य जीव- चौसिंघा, सैण्डग्राउज, बघेरा, जंगली बिल्ली, मगरमच्छ आदि।

45. उत्तर (3)

व्याख्याः-
- **पैराशुटिंग** खिलाड़ी अवनि लेखरा का संबध **जयपुर** जिले से है।
- इन्होंने विभिन्न प्रतिस्पर्द्धाओं में निम्न पदक प्राप्त किए-

प्रतिस्प्रर्द्धा	पदक
पैरिस पैरालम्पिक, 2024	
10 मी. एयर राइफल स्टैंडिंग एस.एच.1 स्पर्द्धा	स्वर्ण (स्कोर-249.7)
टोक्यो पैरालम्पिक, 2020	
(i) 10 मी. एयर राइफल स्टैंडिंग एस.एच.1 स्पर्द्धा	स्वर्ण (स्कोर-249.6)
(ii) 50 मी. राइफल थ्री पॉजीशन एस.एच. स्पर्द्धा	कांस्य
पैराशुटिंग विश्व कप चेतॉरॉक्स (फ्रांस)	
(i) 10 मी. एयर राइफल स्टैंडिंग एस.एच.1 स्पर्द्धा	स्वर्ण (स्कोर-250.6)
(ii) 50 मी. राइफल थ्री पॉजीशन एस.एच. स्पर्द्धा	स्वर्ण (स्कोर-458.3)

- इन्हें निम्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया-

पुरस्कार	वर्ष
पैरालम्पिक खेलों में 'द बेस्ट फीमेल डेब्यू'	2021
मेजर ध्यानचंद खेल रत्न अवार्ड	2021
पद्मश्री	2022

- 2024 में बीबीसी स्पोर्ट्सवुमन ऑफ द ईयर नामित हुई।

46. उत्तर (4)

व्याख्याः-
- तीरंदाज लिम्बाराम का संबंध उदयपुर से है। इन्हें वर्ष 1995-96 में राजस्थान राज्य खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया तथा वर्ष 1989 में महाराणा प्रताप पुरस्कार, 1991 में अर्जुन पुरस्कार व 2012 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

47. उत्तर (2)

व्याख्याः-
- उदयपुर जिले के युग चेलानी स्वीमिंग खेल से संबंधित है।
- ये नेशनल प्रतियोगिता में चार पदक जीतने वाले पहले तैराक बन गये हैं।
- मलेशिया में आयोजित '59वीं इनविटेशनल एज ग्रुप प्रतियोगिता' में युग चेलानी ने कांस्य पदक जीता है।
- कर्नाटक में आयोजित 77वीं सीनियर राष्ट्रीय तैराकी प्रतियोगिता में 2 पदक (एक स्वर्ण एवं एक कांस्य)जीते। युग चेलानी इस प्रतियोगिता में पदक जीतने वाले एकमात्र राजस्थानी खिलाड़ी है।

48. उत्तर (3)

व्याख्याः-

खिलाड़ी	**- खेल**
महेश कुमार रंगा	- साइक्लिंग
हमीदा बानो	- एथलेटिक्स
सलीम दुर्रानी	- क्रिकेट
महासिंह राव	- कुश्ती

49. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- राजस्थान के विभिन्न मुख्य सचिवों का कार्यकाल निम्नानुसार है:

(1) भगत सिंह मेहता:	09.05.1958 से 26.09.1964
तथा	16.01.1965 से 29.10.1966
(2) मोहन मुखर्जी:	07.07.1975 से 01.05.1977
तथा	22.06.1977 से 31.10.1977
(3) देवेंद्र भूषण गुप्ता:	30.04.2018 से 03.07.2020
(4) उषा शर्मा:	31.01.2022 से 31.12.2023

50. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- बीकानेर में स्थित प्रमुख स्थल निम्न है:
  पूगल, गजनेर, जूनागढ, देवीकुंड की छत्तरियाँ, राव कल्याणमल की छतरी, बच्छावतों की हवेली, रायमलोत का थड़ा, कोलायत, भांडाशाह जैन मंदिर, देशनोक, कतरियासर, मुकाम-तालवा, कोडमदेसर आदि।

51. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **सुंधा माता मंदिर**- जालौर जिले में सुंधा पर्वत पर सुंधा माता का मंदिर स्थित है। यह चामुंडा माता की प्रतिमा है। यहाँ राजस्थान का पहला रोप वे स्थापित किया गया।

52. उत्तर (4)

व्याख्या:-

● मंदिर	स्थान
1. ऋषभदेव मंदिर	- धुलैव, उदयपुर
2. सांवलियाजी मंदिर	- मंडफिया, चित्तौड़गढ़
3. द्वारकाधीश मंदिर	- कांकरौली, राजसमंद
4. गौतमेश्वर महादेव मंदिर	- अरनोद, प्रतापगढ़

53. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **कोलवी की बौद्ध गुफाएँ**- झालावाड़ जिले में कोलवी हाथियागौड़, बिनायगा आदि गाँवों में प्राचीन बौद्ध गुफाएँ एवं स्तूफ बने हैं। 5वीं शताब्दी के आसपास निर्मित ये बौद्ध गुफाएँ इस अंचल में बौद्ध धर्म की हीनयान शाखा के प्रभाव को दर्शाती हैं।

54. उत्तर (3)

व्याख्या:-

● राजस्थान के प्रमुख शहर	उपनाम
जोधपुर	सूर्यनगरी
जालौर	ग्रेनाइट सिटी
चित्तौड़गढ़	राजस्थान का गौरव
अलवर	राजस्थान का स्कॉटलैंड
धौलपुर	राजस्थान का पूर्वी प्रवेश द्वार, रेड डायमंड सिटी
सिरोही	राजस्थान का शिमला
उदयपुर	झीलों की नगरी, पूर्व का वेनिस
जयपुर	पिंकी सिटी, राजस्थान का पेरिस
अजमेर	राजपूताना की कुञ्जी
बूँदी	बावड़ियों का शहर

55. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **राजस्थान में प्रमुख दरगाहें:-**
  1. बाबा शक्करपीर की दरगाह - नरहड़ (झुंझुनूं)
  2. खुदाबख्श बाबा की दरगाह - सादड़ी (पाली)
  3. अब्बदुला पीर दरगाह - बाँसवाड़ा
  4. सैय्यद फखरुद्दीन की दरगाह - गलियाकोट (डूँगरपुर) (मजार ए फरवरी)
  5. मीठेशाह की दरगाह - गागरोण (झालावाड़)
  6. ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह - अजमेर
  7. बड़े पीर साहब दरगाह - नागौर

56. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- तिजारा जैन मंदिर जैनधर्म के 8वें तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभु को समर्पित हैं।

57. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **गलताजी-** जयपुर के इस प्रमुख धार्मिक स्थल के मंदिर, मंडप और पवित्र कुंडों के साथ यहाँ का हरियालीयुक्त प्राकृतिक दृश्य अत्यंत रमणीय है। गलताजी पहाड़ियों के मध्य बना हिन्दू धर्म का पवित्र तीर्थस्थल है। यहाँ पर दीवान कृपाराय द्वारा निर्मित सूर्य मंदिर भी है। यह गालव ऋषि की तपोस्थली है। यहाँ स्थित रामगोपाल मंदिर को स्थानीय लोग बंदर मंदिर भी कहते है। संत कृष्णदास पयहारी ने यहाँ रामानुज सम्प्रदाय की पीठ स्थापित की थी। गलताजी को उत्तरी तोताद्री भी कहा जाता है।

58. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- राजस्थान में निम्नांकित स्थानों पर कृषि अनुसंधान सब स्टेशन स्थित है:-
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, हनुमानगढ़
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, बाड़मेर
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, समदड़ी (पाली)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, वल्लभनगर (उदयपुर)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, प्रतापगढ़
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, खानपुर (झालावाड़)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, डिग्गी (टोंक)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, तबीजी (अजमेर)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, नागौर
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, अकलेरा (जयपुर)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, कोटपुतली (जयपुर)
  - ♦ कृषि अनुसंधान सब स्टेशन, कुम्हेर (भरतपुर)

59. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- 1972 में जयपुर में आयुष मंत्रालय द्वारा एक क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान (आयुर्वेद) की स्थापना की गई जिसे अक्टूबर 1999 में क्रमोन्नत करके केन्द्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान बना दिया गया।
- 2010 में इसका नाम बदलकर आयुर्वेद केन्द्रीय अनुसंधान संस्थान कर दिया गया।
- जनवरी 2021 से इसका नाम परिवर्तित करके 'एम.एस. (महाराव शेखाजी) क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान' किया गया।

60. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- जोधपुर में स्थित केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान:-
- इस संस्थान की स्थापना 1952 में रेत की टीलों के स्थिरीकरण और आश्रय पट्टियों की स्थापना के माध्यम से वायु अपरदन के खतरों को नियंत्रित करने के लिए अनुसंधान कार्य हेतु **मरुस्थलीय वनरोपण अनुसंधान केन्द्र (DARS)** के रूप में हुई।
- DARS का 1957 में **मरुस्थलीय वनरोपण एवं मृदा संरक्षण केन्द्र (DASCS)** के रूप में पुनर्गठन किया गया।
- यूनेस्को विशेषज्ञ एवं कॉमनवेल्थ वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान संगठन, ऑस्ट्रेलिया के डॉ. सी. एस. क्रिशचियन की सलाह पर 1 अक्टूबर 1959 को DASCS का नाम बदलकर **केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)** कर दिया गया।
- 1966 में इस संस्थान को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के अधीन कर दिया गया।

61. उत्तर (4)

व्याख्या:-
- बीकानेर में स्थित प्रमुख अनुसंधान केंद्र निम्नलिखित हैं:-
  - ♦ केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान
  - ♦ राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केंद्र, जोहड़बीड़
  - ♦ राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केंद्र, जोहड़बीड़
  - ♦ बेर अनुसंधान केंद्र
  - ♦ खजूर अनुसंधान केंद्र
  - ♦ कृषि अनुसंधान केंद्र
  - ♦ सिरेमिक विद्युत अनुसंधान एवं विकास केन्द्र
  - ♦ अखिल भारतीय शुष्क क्षेत्रीय फल समन्वित अनुसंधान परियोजना, बीछवाल

62. उत्तर (3)

व्याख्या:-
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) के अंतर्गत कृषि तकनीकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी) जोन-II का मुख्यालय जोधपुर, राजस्थान में स्थित है।

63. उत्तर (1)

व्याख्या:-
- राजस्थान का राज्य खेल बास्केटबॉल है, जिसे वर्ष 1948 में राज्य खेल का दर्जा दिया गया।
- राजस्थान के प्रतीक चिह्न और अधिसूचना की दिनाँक निम्नानुसार हैं:

	नाम	अधिसूचना की दिनांक
राज्य पक्षी	गोडावण	21 मई 1982
राज्य पशु	**वन्य जीव श्रेणी** चिंकारा	12 दिसंबर 1983
	पशुधन श्रेणी ऊँट	19 सितंबर 2014
राज्य वृक्ष	खेजड़ी	31 अक्टूबर 1983
राज्य पुष्प	रोहिड़ा का फूल	31 अक्टूबर 1983
राज्य खेल	बास्केटबॉल	1948
राज्य नृत्य	घूमर	

64. उत्तर (2)

व्याख्या:-
- राजस्थान का राज्य पुष्प रोहिड़ा का फूल है, जिसका वैज्ञानिक नाम टिकोमेला अनड्यूलेटा है।
- राजस्थान के विभिन्न प्रतीक चिह्न तथा उनके वैज्ञानिक नाम निम्नानुसार हैं:-

	नाम	वैज्ञानिक नाम
राज्य पक्षी	गोडावण	ओर्डियोटिस नाइग्रीसैप्स/ कोरियटस नाइग्रीसेप्स
राज्य पशु	**वन्य जीव श्रेणी** चिंकारा	गजेला बनेट्टी/ गजेला-गजेला
	पशुधन श्रेणी ऊँट	केमेलस डोमेडेरियस
राज्य वृक्ष	खेजड़ी	प्रोसेपिस सिनेरेरिया
राज्य पुष्प	रोहिड़ा का फूल	टिकोमेला अनड्यूलेटा
राज्य खेल	बास्केटबॉल	
राज्य नृत्य	घूमर	

65. उत्तर (3)

व्याख्या:-
- राजस्थान का राज्य पक्षी गोडावन (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड) है। इसके संरक्षण हेतु राजस्थान की पहली महिला वनरक्षक सुखपाली कार्यरत रही है। इन्होंने मरु उद्यान, जैसलमेर-बाड़मेर में कार्य किया।

66. उत्तर (4)

व्याख्या:-
- जिला कलेक्टर की दंडनायक के रूप में भूमिका निम्नानुसार हैं:
  1. कानून व व्यवस्था बनाए रखना।
  2. जिला पुलिस तंत्र पर नियंत्रण रखना।
  3. साम्प्रदायिक दंगों, उग्र प्रदर्शनों पर नियंत्रण रखना।
  4. विदेशियों के पारपत्र (Visa) की जाँच करना।
  5. जाति, निवास तथा अन्य प्रमाण पत्र जारी करना।
  6. जिला कारागृह/जेल का निरीक्षण करना।
  7. धारा 144 के अंतर्गत शांतिभंग के मामलों की सुनवाई करना।
  8. शस्त्रालयों पर नियत्रंण रखना।
  9. तस्करी, नशीली दवा व्यापार तथा आतंकवादी गतिविधियों पर नियत्रंण रखना।

67. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- राजस्थान उच्च न्यायालय से संबंधित प्रमुख अनुच्छेद निम्नानुसार हैं:-

214. राज्यों के लिए उच्च न्यायालय
215. उच्च न्यायालयों का अभिलेख न्यायालय होना
216. उच्च न्यायालयों का गठन
217. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की नियुक्ति और उसके पद की शर्तें......
218. उच्चतम न्यायालय से संबंधित कुछ उपबंधों का उच्च न्यायालयों को लागू होना
219. उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान..
220. स्थायी न्यायाधीश रहने के पश्चात विधि-व्यवसाय पर निबंधन............
221. न्यायाधीशों के वेतन आदि
222. किसी न्यायाधीश का एक उच्च न्यायालय से दूसरे उच्च न्यायालय को अंतरण
223. कार्यकारी मुख्य न्यायमूर्ति की नियुक्ति
224. अपर और कार्यकारी न्यायाधीशों की नियुक्ति

224क. उच्च न्यायालयों की बैठकों में सेवानिवृत्त न्यायाधीशों की नियुक्ति..........

225. विद्यमान उच्च न्यायालयों की अधिकारिता..
226. कुछ रिट निकालने की उच्च न्यायालय की शक्ति

226क. अनुच्छेद 226 के अधीन कार्यवाहियों में केन्द्रीय विधियों की सांविधानिक वैधता पर विचार न किया जाना लोप किया गया ।।...

227. सभी न्यायालयों के अधीक्षण की उच्च न्यायालय की शक्ति
228. कुछ मामलों का उच्च न्यायालय को अंतरण

[228क. राज्य विधियों की सांविधानिक वैधता से संबंधित प्रश्नों के निपटारे के बारे में विशेष उपबंध लोप किया गया ।]

229. उच्च न्यायालयों के अधिकारी और सेवक तथा व्यय
230. उच्च न्यायालयों की अधिकारिता का संघ राज्यक्षेत्रों पर विस्तार

....

231. दो या अधिक राज्यों के लिए एक ही उच्च न्यायालय की स्थापना ....

68. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- वर्तमान में अन्ता विधानसभा क्षेत्र बाराँ से भारतीय जनता पार्टी के विधायक श्री कंवरलाल निरर्हित होने के कारण यह सीट खाली है (23.5.2025 से)

69. उत्तर (2)

व्याख्या:-

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 163 :-

- **अनुच्छेद 163(1)**- राज्यपाल को संविधान में प्रदत्त उसकी विवेकाधीन शक्तियों के अतिरिक्त अन्य कृत्यों में सहायता एवं परामर्श हेतु एक मंत्रिपरिषद् होगी, जिसका प्रधान मुख्यमंत्री होगा।
- **अनुच्छेद 163(3)**- इस बात की न्यायिक जाँच नहीं की जाएगी कि मंत्रिपरिषद् ने राज्यपाल को सलाह दी अथवा नहीं और यदि दी तो क्या दी। अर्थात् मंत्रियों को विधिक उत्तरदायित्व से मुक्त रखा गया है।

70. उत्तर (2)

व्याख्या:-

एयर चीफ मार्शल ओ.पी. मेहरा (06.03.1982 से 03.11.1985)-

- चीफ ऑफ एयर स्टाफ रहे।
- इंस्टीट्यूट ऑफ आरमामेंट टैक्नोलोजी के डीन के रूप में भी कार्य किया तथा हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लि. के अध्यक्ष भी रहे।

71. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- राज्यपाल अपने पदीय कर्त्तव्य के लिए किसी भी न्यायालय के प्रति उत्तरदायी नहीं होगा।
- राज्यपाल के विरूद्ध उसकी पदावधि के दौरान किसी भी न्यायालय में दाण्डिक/फौजदारी मामले नहीं लाये जा सकते।
- राज्यपाल की पदावधि के दौरान किसी भी न्यायालय द्वारा उसके विरूद्ध गिरफ्तारी आदेश जारी नहीं किया जा सकता।
- राज्यपाल के विरूद्ध व्यक्तिगत कार्य के संबंध में **दीवानी मामले 2 माह पूर्व सूचना** के आधार पर ही लाये जा सकते हैं, अन्यथा नहीं।

72. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- 73वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 द्वारा संविधान में भाग IX में अनुच्छेद 243 A से 243 O तक पंचायती राज संस्थाओं का उल्लेख किया गया है।

संविधान का अनुच्छेद	प्रावधान
243A	ग्राम सभा
243B	पंचायतों का गठन
243C	पंचायतों की संरचना
243D	स्थानों का आरक्षण
243E	पंचायतों की अवधि
243F	सदस्यता के लिए निरर्हताएँ
243G	पंचायतों की शक्तियाँ, प्राधिकार और उत्तरादायित्व
243H	पंचायतों द्वारा कर अधिरोपित करने की शक्तियाँ और उनकी निधियाँ
243I	वित्तीय स्थिति के पुनर्विलोकन के लिए वित्त आयोग का गठन
243J	पंचायतों के लेखाओं की संपरीक्षा
243K	पंचायतों के लिए निर्वाचन
243L	संघ राज्य क्षेत्रों को लागू होना
243M	इस भाग IX का कतिपय क्षेत्रों में लागू न होना
243N	विद्यमान विधियों और पंचायतों का बना रहना
243O	निर्वाचन संबंधी मामलों में न्यायालयों के हस्तक्षेप का वर्जन

73. उत्तर (2)

व्याख्याः-

उद्योग	अवस्थिति
• J.K लक्ष्मी सीमेंट (J.K) पुरम	पिण्डवाड़ा (सिरोही)
• सल्फ्यूरिक एसिड प्लांट	अलवर
• लाफार्ज सीमेंट	चित्तौड़गढ़
• दी महालक्ष्मी मिल्स	ब्यावर
• सेंट गोबेन ग्लास फैक्ट्री	भिवाड़ी (खैरथल-तिजारा)

74. उत्तर (1)

व्याख्याः-

- **DMIC** विकास के लिए राजस्थान में कुल 5 नोड्स का चयन किया गया है-

(i) खुशखेड़ा - भिवाड़ी - नीमराणा (निवेश क्षेत्र)
(ii) जयपुर - दौसा (औद्योगिक क्षेत्र)
(iii) अजमेर - किशनगढ़ (निवेश क्षेत्र)
(iv) राजसमंद - भीलवाड़ा (औद्योगिक क्षेत्र)
(v) जोधपुर - पाली - मारवाड़ (औद्योगिक क्षेत्र)

75. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- **अशोक लीलैंड (Ashok Leyland)**- हिन्दुजा ग्रुप के स्वामित्व में यह ट्रक फैक्ट्री राजस्थान के अलवर में स्थापित है।
- **वेदान्ता जिंक स्मेल्टर**- चंदेरिया (चित्तौड़गढ़)
  वर्तमान में देबारी के संयंत्र का संचालन भी वेदान्ता कम्पनी द्वारा किया जाता है।
- **कांकरोली (राजसमंद)**- यहाँ टायर-ट्यूब बनाने का राजस्थान का सबसे बड़ा कारखाना जे.के. टायर्स है, जो जे.के समूह द्वारा स्थापित किया गया है।
- टायर-ट्यूब फैक्ट्री - अलवर।
- **सेंट गोबेन ग्लास फैक्ट्री :** कहरानी (खैरथल-तिंजारा)
- **फ्लॉट ग्लास संयंत्र :** घिलोट (अलवर)

76. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- वर्ष 2023-24 में रीको द्वारा विकसित नये औद्योगिक क्षेत्र- नाडोल (पाली), धर्मपुरा (बाड़मेर), उमरिया (झालावाड़) माल की तूस (उदयपुर)।

रीको द्वारा विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों व विशेष निवेश क्षेत्र का विकास

- रीको द्वारा जोधपुर के बोरनाडा में मेड टेक मेडिकल डिवाइसेज पार्क का विकास।
- रीको द्वारा प्रदूषण नियंत्रण एवं पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए जयपुर जिले के जमवारामगढ़, थौलाई औद्योगिक क्षेत्र में इंटीग्रेटेड रिसोर्स रिकवरी पार्क का विकास।
- RIICO द्वारा बोरानाडा, जोधपुर (क्षेत्रफल में सबसे बड़ा), रणपुर (कोटा), अलवर व उद्योग विहार, श्रीगंगानगर में 04

एग्रो फूड पार्क्स की स्थापना की गई। इसके अतिरिक्त औद्योगिक क्षेत्र तिंवरी (जोधपुर) में कृषि व खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र का विकास।

- रीको द्वारा औद्योगिक क्षेत्र खुशखेड़ा-भिवाड़ी द्वितीय में स्पोर्टस गुड्स एंड टॉयज जोन का विकास।
- अलवर जिले के नीमराणा औद्योगिक एवं घिलोठ औद्योगिक क्षेत्र में जापानी क्षेत्र में स्थापित किए गये।

77. **उत्तर (4)**

व्याख्या :

- अधिगम व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है।
- अधिगम एक प्रक्रिया है ना कि परिणाम।
- अधिगम से तात्पर्य उन परिवर्तनों से है, जो अभ्यास एवं अनुभवों के फलस्वरूप होते हैं।
- परिपक्वता द्वारा उत्पन्न परिवर्तन अधिगम नहीं है क्योंकि परिपक्वता द्वारा शरीर मे केवल जैविक परिवर्तन होते हैं, जबकि अधिगम (सीखना) शारीरिक, मानसिक आदि प्रतिक्रियाओं को विकसित करना है।

78. **उत्तर (2)**

व्याख्या :

आंतरिक अभिप्रेरणा

- इसका स्रोत मनुष्य के भीतर होता है।
- ऐसे अभिप्रेरण को प्रत्यक्ष रूप से बाहर से देखा नहीं जा सकता।
- यह व्यक्ति को कार्य केन्द्रित रखता है।
- उपलब्धि की आवश्यकता, संबंधन की आवश्यकता, आकांक्षा स्तर आंतरिक अभिप्रेरण के कुछ उदाहरण हैं।

79. **उत्तर (4)**

व्याख्या :

- एक अर्जित अभिप्रेरणा जिससे प्रेरित होकर बालक अपने कार्य को इस ढंग से करता है कि उसे अधिक से अधिक सफलता मिल सके, उपलब्धि अभिप्रेरणा कहलाती है।
  वे व्यक्ति जिनमें उच्च उपलब्धि अभिप्रेरण होता है, ऐसे कृत्यों को वरीयता देते हैं जो मध्यम कठिनाई स्तर या चुनौती वाले हो। प्रगतिशील परिवारों के बच्चों में यह अपेक्षाकृत अधिक होता है।

80. **उत्तर (3)**

व्याख्या :

- रुचि – वह अभिप्रेरक शक्ति जो हमारे ध्यान को आकर्षित कर उसे किसी वस्तु, उद्दीपन या कार्य विशेष के संपादन में बराबर बनाये रखकर हमें वांछित उद्देश्य की पूर्ति में सहयोग प्रदान करती है।

81. **उत्तर (1)**

व्याख्या :

संकेत परक क्रियाओं का प्रयोग

- पियाजे ने संकेत तथा प्रतीकों को प्राक-संक्रियात्मक चिंतन का महत्वपूर्ण साधन माना है।
- अर्थपूर्ण भाव व्यक्त करने के लिए भाव भंगिमा, चिन्ह, आवाज़ और शब्दों का प्रयोग जैसे अभिवादन के लिए हाथ मिलाना आदि।

82. **उत्तर (4)**

व्याख्या :

यांत्रिक सापेक्षिक उन्मुखता

(Instrumental Relativist Orientation) :-

- बच्चों की परस्परिकता व सहभागिता अपने फायदे के लिये होती है।
- जैसे को तैसा की प्रवृत्ति (Tit for Tat)
- वह अच्छा कार्य उसे मानता है, जिससे उसे व्यक्तिगत लाभ हो।
- एक बच्चा कोई कार्य इसलिए करता है कि बदले में उसे कुछ प्राप्त हो।

83. **उत्तर (2)**

व्याख्या :

शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व है-

- विद्यार्थियों की विकासात्मक विशेषताओं को समझने में
- विद्यार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नताओं को समझने में
- प्रभाव शिक्षण विधियों को पहचानने में
- पाठ्यचर्चा के निर्माण में

84. **उत्तर (3)**

व्याख्या :
- शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र को विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है। वृद्धि और विकास के ज्ञान को अधिगमकर्ता के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है।

85. **उत्तर (1)**

व्याख्या :
- नव व्यवहारवादी अमेरीकी मनोविज्ञानिक एडविन रे गुथरी ने पावलव के शास्त्रीय अनूबंधन से आगे बढ़कर अपने विचार सामयिक 'सामीप्यता' (Temporal Contigutiy) का प्रतिपादन किया।

86. **उत्तर (2)**

व्याख्या :
- **परिवर्त्य समयान्तर अनुसूची (Variable Interval) :** पुनर्बलन प्रदान करने में निश्चित समयावधि का ध्यान ना रखा जाए।

87. **उत्तर (1)**

व्याख्या :
- **आंशिक क्रिया का नियम (Law of Partial Activity) :** अधिगम की प्रक्रिया के दौरान व्यक्ति संपूर्ण स्थिति नहीं बल्कि उसमें एक अंश अथवा पक्ष में प्रति अनुक्रिया करता है। इस प्रकार कार्य को विभाजित कर अधिगम प्रक्रिया को सम्पन्न किया जाता है।

  उदाहरण :
  किसी विषय की पढ़ाई के दौरान छात्र अपनी विषय वस्तु को छोटे-छोटे खण्डों में विभाजित करके ही पढ़ते हैं।

88. **उत्तर (2)**

व्याख्या :
- जन्म के समय दाँत नहीं होते हैं हालांकि दाँतों का निर्माण गर्भावस्था में हो जाता है।

89. **उत्तर (2)**

व्याख्या :
- विकास एकीकृत रूप में होता है अर्थात् बालक पहले अपने संपूर्ण अंग को फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है इसके बाद वह उन भागों में एकीकरण करना सीखता है। (Integration)
- विकास एक सतत व निरंतर प्रक्रिया है। इसकी गति कम या ज्यादा हो सकती है। (Continuous Process)
- विकास पूर्वानुमेय होता है अर्थात् इसकी भविष्यवाणी की जा सकती है। (Predictable in Nature)

90. **उत्तर (4)**

व्याख्या :

संवेग (Emotion) की विशेषताएँ -
- संवेग तात्कालिक और क्षणिक होते हैं
- संवेग शारीरिक परिवर्तनों से जुड़े होते हैं (जैसे धड़कन तेज होना, पसीना आना)
- संवेग अनुभव और व्यवहार दोनों को प्रभावित करते हैं
- संवेग हमेशा तर्कसंगत और स्थिर नहीं होते हैं।

91. **उत्तर (1)**

व्याख्या :

प्राचीन अनुबंधन की प्रक्रिया			
अनुबंधन से पूर्व :	घंटी (CS: अनुबंधित उद्दीपक)	⟶	कोई अनुक्रिया नहीं
	भोजन (US: स्वाभाविक उद्दीपक)	⟶	लार (स्वाभाविक अनुक्रिया)
अनुबंधन के समय :	CS+US (घंटी) + (भोजन)	⟶	UR (लार)
अनुबंधन के पश्चात् :	घंटी (CS)	⟶	लार (CR)

US = Unconditioned Stimulus

UR = Unconditioned Response

CS = Conditioned Stimulus

CR = Conditioned Response

92. **उत्तर (2)**

व्याख्या:-
- प्रश्नानुसार विकल्प 1, 3 व 4 पूर्णतया सत्य हैं। वहीं विकल्प-2 असत्य है, क्योंकि 'गोगाजी रा रसावला' नामक रचना बिठू मेहा की है, जसदान बिठू की रचना 'वीर मेहा प्रकाश' है।

93. उत्तर (3)

व्याख्याः-
- रघुराज सिंह हाड़ा का जन्म झालावाड़ जिले के चमलासा गाँव में हुआ।
- यह हाड़ौती अंचल के प्रमुख गीताकार हुए।
- **प्रमुख गीत :** घुघरा, अण बाँच्या आखर, हरदोल, आमल खीवरा, फूल केसुला फूल आदि।

94. उत्तर (2)

व्याख्याः-

ख्यात-
- ख्यातें हमें राजस्थानी भाषा में लिखित गद्य साहित्य के रूप में मिलती है।
- ख्यातों से तत्कालीन समाज की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन होता है।
- ख्यात वंशावली तथा प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रूप है। ख्यातों में राजवंश की पीढ़ियाँ, जन्म मरण की तिथियाँ, किन्हीं विशेष घटनाओं का उल्लेख तथा जिस वंश के लिए ख्यात लिखी गई हो उसके व्यक्ति विशेष के जीवन संबंधी विवरण रहता है।
- ख्यातों का नामकरण वंश, राज्य या लेखक के नाम से किया जाता था। जैसे- राठौड़ाँ री ख्यात, मारवाड़ राज्य रा ख्यात, नैणसी की ख्यात आदि।
- ख्यातों का विस्तृत रूप 16वीं शताब्दी के अन्त से बनना आरम्भ हुआ तो इससे पहले का वर्णन कल्पना के आधार पर दिया गया। अर्थात् 16वीं शताब्दी के पूर्व का वर्णन जो इन ख्यातों से उपलब्ध होता है अधिकांश में कपोल कल्पित ही है।

95. उत्तर (3)

व्याख्याः-
- राजावाटी व तोरावाटी ढूंढ़ाड़ी की उपबोलियाँ हैं एवं सोंधवाड़ी मालवी भाषा की उपबोली है तथा अहीरवाटी मेवाती की उपबोली है।

96. उत्तर (4)

व्याख्याः-
- 2 से 7 जुलाई तक चीन में आयोजित एशिया कप वुशु प्रतियोगिता में राजस्थान की महक शर्मा ने 75 किग्रा. भार वर्ग में रजत पदक जीता।

97. उत्तर (3)

व्याख्याः-

मुख्यमंत्री शिक्षित राजस्थान अभियान-
- यह अभियान राज्य सरकार का फ्लैगशिप कार्यक्रम है जिसकी शुरूआत 29 मार्च, 2025 को की गई।
- पूर्व में संचालित "स्कूल में शिक्षा के बढ़ते कदम" अभियान का नाम बदलकर 'मुख्यमंत्री शिक्षित राजस्थान अभियान' किया गया।
- **उद्देश्यः** नई शिक्षा नीति 2020 के सुधारों को प्रभावी रूप से लागु करना।
- इस अभियान के 4 प्रमुख घटक हैं-

  1. विद्यालय 2. विद्यार्थी
  3. शिक्षक 4. शैक्षणिक परिणाम
- इस अभियान का **दूसरा चरण 1 से 24 जुलाई, 2025** तक चलाया गया।

98. उत्तर (1)

व्याख्याः-
- **राजस्थानी** भाषा के लिए **साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार-2025 पुनम चन्द गोदारा** (1992) को उनकी पुस्तक **"अंतस रै आगणै (कविता)"** के लिए प्रदान किया गया।
- पुरस्कारः- ताम्र पट्टिका व 50 हजार रूपये

99. उत्तर (4)

व्याख्याः-

मुख्यमंत्री सर्वजन उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति योजना-
- पर्यावारण संरक्षण को बढ़ावा देना, पोक्सो अपराधों को रोकना, कन्या भ्रूण हत्या रोकना व बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना, विधिक जागरूकता से महिलाओं को सशक्त बनाना व योजनाओं का लाभ पहुँचाने हेतु **सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग** द्वारा **मुख्यमंत्री सर्वजन उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति योजना** प्रारम्भ की गई।
- **प्रावधानः** इस योजना के तहत राज्य सरकार विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा हेतु शिक्षण संस्था द्वारा ली जाने वाली अनिवार्य नॉन रिफंडेबल फीस राशि की 50 प्रतिशत फीस राशि का पुनर्भरण करेगी।

100. उत्तर (3)

व्याख्याः-

राज उपचार ऐप-

- हाल ही में राजस्थान सरकार ने प्रदेशवासियों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाने हेतु राज उपचार ऐप लॉन्च किया है।
- इस ऐप के माध्यम से मरीज चिकित्सकीय परामर्श हेतु ऑनलाइन अपॉइंटमेंट बुक कर सकते हैं।

101. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- जुलाई, 2025 तक राजस्थान 103 मेजर मिनरल ब्लॉकों की नीलामी के साथ देश में पहले पायदान पर पहुँच गया है। (देश में 20 प्रतिशत से अधिक)

102. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- 10 जुलाई को भारत की साइबर रक्षा क्षमताओं को मजबूत करने तथा कुशल साइबर सुरक्षा कार्यबल के निर्माण हेतु इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत आने वाली 'भारतीय कम्प्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम' (CERT-In) तथा बिट्स पिलानी के मध्य MoU किया गया है।

103. उत्तर (3)

व्याख्याः-

धरती आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष अभियान-

- 15 जून से 15 जूलाई 2025 तक पूरे भारत के 549 जिलों के 63000 से अधिक जनजातीय बहुल गांवों में एक राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया गया।
- **उद्देश्यः** जागरूकता, पहुंच तथा सशक्तिकरण के माध्यम से जनजातीय समुदायों को सशक्त बनाना तथा सरकारी योजनाओं का लाभ ग्रामीण जनजाति परिवारों तक पहुँचाना।
- राजस्थान में राज्यस्तरीय इस अभियान की शुरूआत जनजाति विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी द्वारा **उदयपुर जिले के कोटड़ा ब्लॉक** से की गई।
- राजस्थान राज्य में यह अभियान 37 जिलों के 207 विकास खंडों के 6019 ग्रामों में संचालित किया गया।

104. उत्तर (3)

व्याख्याः-

(राजस्थान सरकार के फ्लैगशिप योजना/कार्यक्रम)	(सम्बन्धित विभाग)
• स्वामित्व योजना -	पंचायती राज विभाग
• मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना -	स्वायत शासन विभाग
• अमृत योजना -	जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग
• अटल ज्ञान केन्द्र -	पंचायती राज विभाग

105. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- जुलाई, 2025 में राज्य की सहकारी समितियों के उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बाजार तक पहुँचाने के लिए राजस्थान राज्य सहकारी क्रय विक्रय संघ लिमिटेड व राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड के मध्य MoU हस्ताक्षरित किया गया।

1. उत्तर ()

व्याख्याः-

- =f

115. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- **किलपेट्रिक के अनुसार** - "प्रोजेक्ट सामाजिक वातावरण में पूर्ण संलग्नता से किया जाने वाला उद्देश्यपूर्ण कार्य है।"
- **बैलार्ड के अनुसार** - "प्रोजेक्ट वास्तविक जीवन का एक छोटा सा अंश होता है, जिसे विद्यालय में सम्पादित किया जाता है।"
- **पार्कर के अनुसार** - "प्रोजेक्ट कार्य की एक इकाई है जिसमें छात्रों को कार्य की योजना और सम्पन्नता के लिए उत्तरदायी बनाया जाता है।"

116. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- प्रयोजना कार्य में छात्र ज्ञान को खण्डों में धीरे-धीरे प्राप्त करते हैं।
- यह गतिविधि आधारित होती है ना कि केवल अवलोकन उन्मुख।
- इसमें छात्र स्वतंत्र रूप से प्रोजेक्ट पर कार्य करता है, शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है।
- इसमें जिस प्रोजेक्ट पर कार्य किया जाता है वह जीवनोपयोगी एवं वास्तविक होता है।

117. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **जेम्स हेमिंग** - 'सामाजिक अध्ययन सम्बन्धों तथा ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा सामाजिक अन्त: सम्बन्धों का अध्ययन है।'
- **ई.बी. वेस्ले के अनुसार:-** "सामाजिक अध्ययन नामक पद उन विद्यालय विषयों की ओर संकेत देता है जो मानवीय संबंधों का विवेचन करते हैं। यह विषयों के एक संघ तथा पाठ्यक्रम के एक खण्ड का निर्माण करता है, जो प्रत्यक्ष रूप से मानवीय संबंधों से संबंधित है।" अर्थात् 'सामाजिक अध्ययन विभिन्न सामाजिक विषयों के आधारभूत तत्वों का अध्ययन है।'
- **जॉन यू. माइकेलिस के अनुसार** – "सामाजिक अध्ययन, अतीत, वर्तमान तथा भविष्य में मनुष्य तथा उसके अपने सामाजिक एवं भौतिक वातावरण के प्रति की जाने वाली अंत:क्रियाओं से संबंधित है, जिसमें मानवीय संबंधों का अध्ययन किया जाता है।
- **जे.एफ. फोरेस्टर** के शब्दों में "सामाजिक अध्ययन शिक्षा के आधुनिक दृष्टिकोण का एक अंश है जिसका ध्येय तथ्यात्मक सूचनाओं को संग्रहित या एकत्र करने की अपेक्षा मानदण्डों, वृतियों, आदर्शों तथा रूचियों का निर्माण करना है।"

118. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- सामाजिक अध्ययन मानव एवं मानव, मानव एवं संस्थाएँ और मानव एवं पर्यावरण के बीच सम्बन्धों का अध्ययन है।

119. Ans. (3)

Explanation:

- ♦ जब कोई Proper noun जैसे 'Shakespeare' किसी अन्य व्यक्ति की quality or characteristic को represent करने के लिए use किया जाता है, तब यह Proper noun एक common noun की तरह function करती है।
- ♦ Definite article "the" is used to specify that particular quality/role before this type of namming word.

120. Ans. (4)

Explanation:

- ♦ The present continuous tense (am going) is often used to express definite future plans or arrangements, especially when a time expression like "next week" is present.

121. Ans. (3)

Explanation:

- ♦ दिया गया Sentence एक wish or hypothetical situation को व्यक्त कर रहा है जो वाक्य के प्रकार Conditional type-II को represent करता है।
- ♦ अत: verb "were" is used for all persons (I, you, he, she, it, we , they).

122. Ans. (3)

Explanation:

- ♦ Object "him" becomes the subject "He" in the passive voice
- ♦ Made - was made
- ♦ the captain remains as the complement.
- ♦ "by them" is added for the doer of the action.

123. Ans. (3)

Explanation:

- ♦ Come up with means to think of or produce (a plan, idea or solution)

124. Ans. (3)

Explanation:

- Put out means to extinguish (a fire, light etc.)

125. Ans. (3)

Explanation:

- The idiom "a wild goose chase" referes to a foolish and hopeless pursuit of something unattainable or pointless.
- Thus, it signifies a futile effort.

126. Ans. (1)

Explanation:

- The idiom "to smell a rat" means to suspect that something is wrong, deceptive or dishonest.
- It implies a fecling of suspicion or distrust.

127. Ans. (4)

Explanation:

- Discrete point item tests focus on testing individual element of language in isolation.
- Spelling tests where specific words are presented to assess a students's knowledge of correct letter sequence, are a classic example of this approach.

128. Ans. (4)

Explanation:

- Direct Method में target language को ही Classroom में use किया जाता है जबकि students की native language का use सख्ती से प्रतिबंधित होता है।

129. Ans. (3)

Explanation:

- Dr. west's method also known as the New method, primarily aimed at developing reading skills and a large passive vacabulary in learners.

130. Ans. (2)

Explanation:

- In communicative language teaching-
- Errors are tolerated.
- The focus is on the real language use.
- It is learner centred.

131. Ans. (2)

Explanation:

- Polysemy - बहुअर्थी अर्थात् किसी एक ही शब्द के अनेक अर्थ।
- Homonyms - ऐसे शब्द जो सुनने में एक जैसे परन्तु उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं।
- Polyemy & Homonyms play a significant challenge in vocabulary acquisition for learners.

132. Ans. (1)

Explanation:

- Summative assessment in CCE (सतत एवं व्यापक मूल्यांकन - Continuous & comprehensive evaluation) refers to Evaluation at the end of a learning cycle.
- This type of asessment aims to evaluate a students's learning of a specific period such as academic year etc.

133. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- कमर कसना - तैयार होना
- कच्चा चिट्ठा खोलना - रहस्य बताना
- किला फतेह करना - किसी कठिन कार्य में सफलता प्राप्त करना
- खाक छानना - निरुद्देश्य से भटकना

134. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- लालमणि - लाल है जो मणि (कर्मधारिय समास)
- सिरदर्द - सिर में दर्द (अधिकरण तत्पुरुष)
- वनमानुष - वन में रहने वाला मानुष (लुप्त पद तत्पुरुष समास)
- काव्यनिपुण - काव्य में निपुण (अधिकरण तत्पुरुष)

135. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- यथेष्ठ - अशुद्ध शब्द
- दुरवस्था, फिटकिरी, आप्लावित, यथेष्ट - शुद्ध शब्द

136. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- जगत् + शांति = जगच्छांति
- अति + उष्ण = अत्युष्ण
- सागर + ऊर्मि = सागरोर्मि
- ऊर्ध्व + अधर = ऊर्ध्वाधर

137. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- अरावली, पीतल, मिनट - पुंल्लिग शब्द
- संसद - स्त्रीलिंग शब्द

138. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं। (अपूर्ण वर्तमान काल)
- अक्षय खेत में काम करता होगा। (संदिग्ध वर्तमान काल)
- सरिता ने पाठ पढ़ा होगा। (हेतुहेतुमद् भूतकाल)
- आज वर्षा हो सकती है। (संभाव्य भविष्यत् काल)

139. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- मैं प्रात: काल घूमने जाता हूँ। (उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम)
- वह अपने आप चला जाएगा। (अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम)
- आप कल मेरे घर अवश्य पधारिए। (मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम)
- आप भला तो जग भला। (निजवाचक सर्वनाम)

140. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- दया-भाववाचक संज्ञा

141. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- अधिगम अर्जित करने की दृष्टि से प्रत्यक्ष एव मूर्त अनुभव अत्यधिक सहज एवं स्वाभाविक होते हैं। ज्यों-ज्यों हम **प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष** की ओर या **मूर्त से अमूर्त** की ओर बढ़ते हैं, अधिगम अर्जित करने के लिए **विशेष प्रयास** करना होता है।

एडगर डेल का अनुभव शंकु (Edger Dale's Cone of Experiences)

142. उत्तर (3)

व्याख्या:-

फ्लैनल बोर्ड (Flannel Board) :-

- यह लकड़ी का बना एक बोर्ड होता है, जिस पर फ्लैनल का कपड़ा चढा होता है और इस पर **चित्रों को चिपकाकर** प्रदर्शित किया जाता है। यह ऊन, सूत या बालों का बना फ्लेनल(कपड़ा) होता है। इसके ऊपर चित्र अक्षर अथवा रेखाचित्र जिनके पीछे **रेगमाल कागज (Sand Paper)** की पट्टियाँ चिपकी रहती है।

143. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **फ्लैश कार्ड (Flash Card)**- यह भाषा शिक्षण की एक प्रभावी तकनीक है। फ्लैश कार्ड पर शब्द, चित्र या वाक्य लिखे होते हैं। इनका प्रयोग कर बच्चे शब्दों को पहचानते हैं, वाक्य बनाना सीखते हैं और शब्दों का उचित प्रयोग करने का अभ्यास करते हैं।

144. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- ये सभी कार्य लेखन कौशल से संबंधित हैं।
- **अनुलिपि (Transcription)**- किसी पाठ को देखकर जैसा का तैसा लिखना।
- **प्रतिलिपि (Copying)**- किसी दस्तावेज़ की नकल बनाना।
- **श्रुतलिपि (Dictation)**- सुनकर लिखना।

- ये तीनों ही अभ्यास लिखने की गति, शुद्धता और वर्तनी को सुधारने में मदद करते हैं, जिससे लेखन दक्षता में वृद्धि होती है।

145. उत्तर (2)

व्याख्या:-

भाषा के चार मुख्य कौशल हैं-

- **श्रवण (सुनना)**- मौखिक प्रश्नोत्तर में प्रश्नों को सुनकर समझना।
- **वाचन (बोलना)**- मौखिक प्रश्नों का उत्तर बोलकर देना।
- **पठन (पढ़ना)**- लिखित प्रश्नों को पढ़ना।
- **लेखन (लिखना)**- लिखित प्रश्नों का उत्तर लिखना।
- मौखिक और लिखित दोनों प्रकार के प्रश्नोत्तर के माध्यम से ये चारों कौशल विकसित होते हैं।

146. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- बच्चों में मातृभाषा सीखने की प्रक्रिया अनुकरण पर आधारित होती है। बच्चा अपने परिवार और आसपास के वातावरण में जैसा सुनता है, उसी का अनुकरण करके बोलना सीखता है।
- इस विधि में शिक्षक या माता-पिता द्वारा बोले गए शब्दों, वाक्यों और उच्चारण का बच्चा अनुसरण करता है, जिससे वह स्वाभाविक रूप से अपनी मातृभाषा सीखता है।
- यह मातृभाषा शिक्षण की सबसे प्राकृतिक और प्रभावी विधि मानी जाती है।

147. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- भाषा विकास में कई कारण बच्चों के भाषायी पिछड़ापन (Language retardation) के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।
- **स्वास्थ्य दोष (Health defects)**- जैसे कान की समस्या, जीभ की समस्या, होंठ कटे होना इत्यादि। ये शारीरिक कारण होते हैं।
- **दूषित वातावरण (Unfavorable environment)**- यदि बच्चे को सही भाषा-सम्पन्न वातावरण न मिले तो उसका भाषाई विकास धीमा रह जाता है।
- **बुद्धि मंदता (Mental retardation)**- मानसिक क्षमता कम होने से भाषा सीखने और सही उच्चारण में कठिनाई आती है।
- **दुरभ्यास (Bad habits / wrong practice)**- जब बच्चा गलत उच्चारण का अभ्यास करता है या गलत बोलचाल की आदत डाल लेता है तो वह आदत उसकी भाषा में स्थायी हो जाती है। इसे ही बनावटपन से उच्चारण का व्यवहार कहा जाता है।

148. उत्तर (1)

व्याख्या:-

भाषा संसर्ग विधि/अव्याकृत विधि -

- इस विधि के अनुसार व्याकरण की शिक्षा स्वतंत्र रूप से नहीं दी जाती है। बल्कि भाषा की शिक्षा के साथ ही व्याकरण की शिक्षा प्रदान की जाती है।
- बालक बिना व्याकरण के नियम जाने ही मातृभाषा का शुद्ध प्रयोग कर सीखते हैं।
- यह व्याकरण के अनौपचारिक शिक्षण की विधि है।
- इस विधि में **भाषा की शिक्षा के साथ ही व्याकरण शिक्षा** दी जाती है।

149. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **आगमन विधि के रूप**- आगमन विधि के दो रूप हैं -

  (i) प्रयोग विधि (ii) सहयोग प्रणाली

(i) प्रयोग विधि :- इस विधि के अनुसार व्याकरण पढ़ाते समय छात्रों के सम्मुख पहले उदाहरण रखे जाते हैं। अनेक उदाहरणों में समान लक्षण वाले अंशों के आधार पर सिद्धांत या नियम निकलवाए जाते हैं और फिर उन्हीं से उनका प्रयोग तथा अभ्यास कराया जाता है।

(ii) सहयोग प्रणाली :- इसके अनुसार व्याकरण की शिक्षा अलग से नहीं दी जाती है, अपितु रचना शिक्षण तथा गद्य शिक्षण के साथ ही यथा प्रसंग व्याकरणिक रूपों एवं नियमों का ज्ञान प्रदान कर दिया जाता है। इसे **समवाय विधि** भी कहते हैं।

150. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- भाषिक तत्वों, ध्वनि, शब्द और वाक्य के क्रियात्मक व प्रयोगात्मक शिक्षण के दो प्रमुख उपागम हैं-

  1. पाठ संसर्ग उपागम

  2. रचना शिक्षण उपागम

पाठ संसर्ग उपागम

- इसका तात्पर्य है कि पाठ्य पुस्तक के पाठ को पढ़ाते समय यथासंभव भाषा के तत्वों की शिक्षा प्रदान करना। पाठ में प्रयुक्त शब्दों का वाक्यों के आधार पर उच्चारण, शब्दार्थ, शब्द रचना और वाक्य संरचना से संबंधित दक्षताओं को विकसित करना।

रचना शिक्षण उपागम

- इसमें भाषिक तत्वों के ज्ञान व प्रयोग का प्रचुर अवसर मिलता है। रचना शिक्षण वस्तुतः अर्जित ज्ञान के प्रयोगात्मक अभ्यास का उपागम है।
- रचना के दो रूप होते हैं- (i) मौखिक रचना (ii) लिखित रचना